उपसंहार

1. *महाकाव्य में वर्णित धर्म और साधना के स्वरूप का निष्कर्ष तथा मुख्य स्थापनाए*

भारतीय धर्म की अवधारणा लोकमंगल है। यह अवमानवमात्र ऐहिक एवं निःश्रेयस के लिए समर्पित है। इसके क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व समाहित है। सम्पूर्ण मानवता के लिए दिव्य आलोक है। इसके वास्तविक स्वरूप को समझना ब्रह्म विज्ञान की तरह अत्यंत ही कठिन है। यह सहृदय साधक के द्वारा साधना से ही संवेद्य है। श्रुति भी इससे प्रभावित है, अतएव कहती है– ''धर्मचर''। पर इसके स्वरूप की मीमांसा आचार्यों ने विविध प्रकार से की है। अतएव धर्म के स्वरूप को किसी एक दृष्टि से निरूपित नहीं किया जा सकता। परमात्मा की सत्ता की तरह धर्म की सत्ता अतिशय व्यापक है।

धर्म श्रुति में प्रणव की तरह विद्याओं का सार है। यह शाश्वत सत्य, शिव, सुन्दर, ब्रह्म का परम प्रकाश सभी का प्रकाशक है। भारतीय वाङ्मय (वेद–सहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, रामायण, पुराण, दर्शन, स्मृति आदि) में धर्म प्रायः सर्वत्र अभिव्याप्त है।

कवि राजा रुद्रप्रताप सिंह अक्षरब्रह्म के सच्चे साधक हैं। उन्होंने निरन्तर सारस्वत साधना के द्वारा धर्मतत्त्व का हृदय में साक्षात्कार किया है। अतएव कवि सतत् साधना के द्वारा धर्मस्वरूप राम की आराधना करने में सफल हुआ है। वह कहता है कि वह (रुद्रप्रताप) भक्त है और भगवान राम उसके आराध्य हैं। वह सेवक है और उसके रघुराई साहेब हैं। कवि की यह अक्षरसाधना पराम्बा महासरस्वती की सात्विक सआराधना है। वह पराम्बा की दिव्य मंगलप्रभा है, जिसके द्वारा सम्पूर्ण विश्व की मानवता आलोकित है। रामखण्ड रामायण में

संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, पुराण एवं स्मृति ग्रन्थों में निरूपित धर्म की अवधारणा का उल्लेख कवि श्रद्धा और आदर के साथ करता है।

धर्म की विसंगतिपूर्ण परिस्थितियों ने कवि हृदय को उद्वेलित किया और इसी उद्वेलन के फलस्वरूप, धर्म की व्याख्या हेतु रामखण्ड रामायण प्रबन्ध में वह प्रवृत्त हुआ। भारतीय वाङ्मय में धर्म के सच्चे स्वरूप पर विचार हुआ है। आज इसी धर्म की आवश्यकता है, जिसकी समग्र विश्व अनुयायी बन सके। हमारा यही समुद्घोष रहा है कि संसार के सभी प्राणी सुखी हों, निरामय रहे, सभी का कल्याण हो, कोई भी दीन दुःखी न रहे।

वह धर्म ही है जो युगों से मानवता की सेवा कर रहा है। इतिहास इसका प्रमाण है। धर्म की शक्ति का महत्व केवल व्यक्तिगत जीवन के लिए ही नहीं सामाजिक जीवन के लिए भी है।

धर्म से अनुप्राणित और ईश्वरीय चेतना से अभिभूत समाज के विभिन्न व्यक्ति समाज में समता और सहयोग की स्थापना करते हैं। धर्म समाज के निर्माण और विकास में सहायक हुआ है।

धर्म और साधना का स्वरूप उन सभी विषयों का विवेचन तथा मूल्यांकन करता है जिनका मनुष्य के धार्मिक जीवन से सम्बन्ध है और जिन पर तर्कसंगत रूप में विचार किया जा सकता है। मनुष्य की सभी अनुभूतियाँ क्रियाएँ, मान्यताएँ, विश्वास, कर्मकाण्ड, संस्थाएँ एवं सिद्धान्त धर्म और साधना के स्वरूप के क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मिलित मूल विषय है।

इस प्रकार से धर्म और साधना के स्वरूप के क्षेत्र की परिधि भी बहुत विस्तृत हो जाती है।

ब्रिटिश शासन में जब भारतीय राजा तथा अन्य राजसी घराने के लोग

अपनी–अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने में लगे थे उस समय लगभग 4000 पृष्ठों एवं 9 खण्डों में यह ग्रन्थ माण्डा राज्य से 1911 में प्रकाशित हुआ।

तत्कालीन नरेश रुद्र प्रताप सिंह ने इसे अवधी बोली में दोहा, चौपाई, छन्द में लिखा है।

यह ग्रन्थ महाकाव्य के रूप में लिखा गया है। जहाँ भी पुराणों में रामकथा का उल्लेख हुआ है उन सबको इस रामकथा में समेट लिया गया है। इस प्रकार इस ग्रन्थ के अध्ययन से रामकथा पर नवीन प्रकाश पड़ेगा।

सुसिद्धान्तोत्तम–रामखण्ड एक महाकाव्य है। धर्म, दर्शन, पुराण के अतिरिक्त भारतीय इतिहास पर भी इस शोध कार्य से प्रकाश पड़ेगा। राजा रूद्र प्रताप सिंह ने बड़े धैर्य से उत्तरकाण्ड में संक्षेप में भारत का इतिहास भी लिख दिया है जिनमें इतिहास के मूल तत्व, वैदिक साहित्य, वंश सूचियों और आख्यान, गाथा पुराण आदि का वर्णन स्पष्ट रूप से किया गया है। राजाओं का युद्ध एवं विजय वर्णन स्पष्ट रूप से किया गया है। राजाओं का युद्ध एवं विजय वर्णन उनके धर्म, दर्शन, साहित्य एवं कला को सजीवता से प्रस्तुत कर साहित्य एवं कला के पुजारियों का ध्यानाकर्षण किया है।

रामखण्ड रामायण का स्थान हिन्दी–साहित्य में ही नहीं, जगत् के साहित्य में निराला है। इसके जोड़ का ऐसा ही सर्वांग सुन्दर, उत्तम काव्य के लक्षणों से युक्त, साहित्य के सभी रसों का आस्वाद कराने वाला, काव्यकला की दृष्टि से भी सर्वोच्च कोटि का तथा आदर्श गार्हस्थ्य–जीवन, आदर्श राजधर्म, आदर्श पारिवारिक जीवन, आदर्श पातिव्रतधर्म, आदर्श भ्रातृधर्म के साथ–साथ सर्वोच्च भक्ति, ज्ञान, त्याग और वैराग्य तथा सदाचार की शिक्षा देने वाला स्त्री–पुरुष, बालक–वृद्ध और युवा–सबके लिए समान उपयोगी एवं सर्वोपरि सगुण–साकार भगवान की आदर्श मानवलीला तथा उनके गुण, प्रभाव, रहस्य तथा प्रेम के गहन तत्त्व को अत्यंत सरल, रोचक एवं ओजस्वी शब्दों में व्यक्त करने वाला कोई

दूसरा ग्रन्थ हिन्दी भाषा में ही नहीं कदाचित् संसार की किसी भाषा में आज तक नहीं लिखा गया।

इसका श्रद्धापूर्वक पाठ करने तथा इसमें आये हुए उपदेशों का विचारपूर्वक मनन करने एवं उनके अनुसार आचरण करने से तथा इसमें वर्णित भगवान् की मधुर लीलाओं का चिन्तन एवं कीर्तन करने से मोक्ष रूप परम पुरुषार्थ एवं उससे भी बढ़कर भगवत्प्रेम की प्राप्ति आसानी से की जा सकती है। क्योंकि कवि का उद्देश्य भगवत् भजन करना ही विशेष रूप से रहा है।

धर्म और दर्शन की दृष्टि से मध्यकालीन धर्म, सम्प्रदाय और दर्शन का प्रभाव है। सर्वाधिक लोग वैष्णव धर्म से सम्बद्ध हैं। समाज और संस्कृति के प्रसंग में दो कालों का समन्वय है– 1. रामकालीन 2. कवि कालीन। सम्पूर्ण रामखण्ड रामायण में परम्परा मौलिकता एवं समसामयिकता का समन्वय है। रामखण्ड रामायण के स्रोत वेद, पुराण, उपनिषद, धर्मशास्त्र, स्मृतियाँ, समाज और रीति–रिवाज हैं। इनके साथ कवि के मौलिक विचार व साधानायें भी हैं। समसामयिक धार्मिक और सामाजिक वातावरण है।

धर्म और साधना के माध्यम से हम अपने व्यक्तित्व को विकसित करते हैं फलस्वरूप अंतःक्षेत्र की प्रसुप्त गरिमा ऋद्धि–सिद्धि बनकर प्रकट होती है। ऐसे ही पराक्रमी लोगों पर राम की अनुकम्पा बरसती है। अतः कवि की चिंतन सम्वृत्तियों का पुरातन वाङ्मय के धार्मिक तत्वों के साथ समीक्षा करके धर्म की अवधारणा प्रस्तुत करने से मानव जाति को निश्चय ही एक नयी दिशा मिलेगी और उसके ज्ञान से सभी का कल्याण हो सकेगा।

प्रस्तुत शोध कार्य में धर्म की जो सार्वभौम कल्याणकारी प्रवृत्ति है, उसका स्वरूप स्पष्ट रूप से सामने आयेगा। इस शोध कार्य का सर्वोत्कृष्ट उद्देश्य यही कि मानव मात्र सार्वभौम कल्याणकारी धर्म की अवधारणा से अवगत होकर

मानवीय मूल्यों को समझकर मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाये, जिससे समग्र विश्व का कल्याण हो सके।

वर्तमान समय में यह शोध कार्य निःसन्देह जनमानस को नवीन मार्ग प्रशस्त करेगा तथा कटुता व वैमनस्य को दूर करने और शुद्ध सात्विक वैचारिका का उद्‌भव करने में सक्षम होगा। क्योंकि धर्म भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। धर्म के व्यावहारिक और पारमार्थिक दो प्रयोजन है। एक ओर व्यवहार में धर्म का उद्‌देश्य सामाजिक जीवन का निर्माण है। इसके द्वारा व्यक्ति परिवार और समाज के प्रति अपने दायित्वों का ज्ञान प्राप्त करता है यदि धर्म का उद्‌देश्य केवल इतना ही होता तो इससे संघर्षों की सृष्टि न होती। परन्तु मनुष्य के अन्तःकरण में अज्ञात को जानने की जो जिज्ञासा विद्यमान है, धर्म उसका रहस्य भी प्रकट करता है। मनुष्य धर्म से ही राज्य प्राप्त करता है, धर्म से ही स्वर्ग लाभ करता है तथा आयु, कीर्ति, तप की प्राप्ति के साथ–साथ अन्त में मोक्ष भी प्राप्त करता है। इस तरह परमार्थ के नाम पर धर्म की व्यावहारिक उपयोगिता समाप्त हो जाती है। किन्तु बहुत से बुद्धिजीवियों का कहना है कि वर्तमान में धार्मिक उन्माद, पारस्परिक विद्वेष और वितृष्णा का जन्म मूलतः पारमार्थिक समर्पण के अभाव के कारण ही है, जिनका निदान संत समाज का अवतरण ही कर सकता है। भारत में अनेकों सन्त महात्माओं ने विलगाव में एकता का सूत्र ढूँढ़ा है, उनमें एक कड़ी हैं– कवि रूद्र प्रताप सिंह।

कवि राजा रूद्रप्रताप सिंह द्वारा रचित रामखण्ड रामायण समस्त निगमागम, पुराण तथा उपनिषद आदि का मंथन करके सार रूप में निकाला गया शाश्वत नवनीत है। विश्व भर में मानवता के लिए अनुकरणीय आचरण, कर्त्तव्य परायणता, मनुष्य के समस्त लोक व्यवहारों की सुदृढ़ प्रतिष्ठित परम्परा श्रद्धा, भक्ति, ज्ञान एवं कर्मोपासना का सुव्यवस्थित सोपान, धर्म नीति का परिपुष्ट सिद्धान्त जीवन की समस्त समस्याओं का समुचित समाधान इस सर्वोत्तम अनुपम

ग्रन्थ में प्राप्त होता है। इस प्रकार सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड रामायण धर्म और साधना की शिक्षा का आदर्श ग्रन्थ है।

2. उपादेयता एवं भावी सम्भावनाएँ

श्रीराम विश्व को दिशा देने वाले व्यक्तित्व हैं। देवत्व से बड़ी है देवत्व की साधना। राम को दुख ही भोग लगे और भोग उन्हें काटते रहे। उनसे दूसरों का दुःख नहीं देखा गया। वस्तुतः दुख पुरुषार्थ को जगाकर जीवन को गति प्रदान करता है। राम कथा मानवता की परिक्रमा ही नहीं, बल्कि कर्म त्याग और भक्ति त्रिवेणी है। राम जीवन को उच्च से उच्चतम स्तर पर उठाकर इसे सुन्दर से सुंदरतम बनाते हैं, देवत्व से बड़ी देवत्व की साधना है। श्री राम का जीवन आज भी प्रासंगिक है। विश्व में परिस्थितियाँ वही हैं। राम का जीवन वर्तमान संदर्भ में नैतिकता का संदेश है। रामकथा का सार्वकालिक रूप राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रतिष्ठित करता है। राम का आदर्श मानव चेतना का उत्कर्ष है।

रामकथा में सत्य से बढ़कर दूसरा कोई अन्य धर्म ही नहीं है। सभी पुण्यों का मूल कारण मात्र सत्य ही है। दूसरे के परोपकार से बढ़कर कोई धर्म नहीं भेदभाव, अन्याय असत्य का विरोध करने के कारण ही राम भारत के कण–कण में रचे–बसे हैं। सद्‌गुणों के कारण वह नरोत्तम हैं। अनेक कष्ट उठाते हुए श्री राम शील, प्रेम, नैतिकता, करुणा और क्षमा के प्रतिमान हैं। जीवन मूल्यों में रची–बसी राम की सृष्टि लोकमंगल की मंदाकिनी में अवगाहन कराती है। राम का जन्म सारे सुखों का मूल है।

राजा रुद्र प्रताप सिंह विरचित 'सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड रामायण' एक ऐसा ही महाकाव्य है जिसके प्रसंगों में जीवन के मोती छिपे हुए हैं। इसका श्रद्धा एवं विश्वास के साथ पाठ, चिन्तन तथा अनुपालन करने से प्रभु श्रीराम का हम सभी को अनुग्रह प्राप्त ही हो जाता है। रामखण्ड रामायण का अवलोकन जितने

सार्थक दृष्टिकोण से किया जाता है, उसके प्राकट्य की प्रतीति कहीं अधिक उपादेय एवं तुष्टिप्रद है। यह एक ऐसा समन्वयवादी महाकाव्य है, जिसमें कवि ने जीवन के सर्वांग दर्शन की व्याख्या की है। सामान्यतः सार्वजनिक जीवन के प्रत्येक पक्ष के लिए 'सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड रामायण' की उपादेयता कितनी उत्तम और सार्थक है, ''सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड अवधी महाकाव्य में धर्म और साधना का स्वरूप'' शोध कार्य के माध्यम से कहने का प्रयास मात्र किया है।

यह शोध कार्य समाज निरपेक्ष प्रचलित कुछ मान्यताओं पर प्रतिक्रिया है। समसामयिक परिस्थितियों में दृष्टिगत परिवर्तन के अनुरूप 'रामखण्ड रामायण' में वर्णित विविध मान्यताओं की वर्तमान जीवन में स्वीकार्यता, आडम्बरहीनता की अनिवार्यता तथा आदर्श नागरिकता के निमित्त नागरिकों की स्वशासन एवं प्रशासन के प्रति कर्त्तव्यशीलता के बारे में महाकाव्य की वैचारिक, बौद्धिक तात्त्विक प्रासंगिकता को उभारने का प्रयास किया है।

तत्कालीन विविध सामाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं शैक्षिक आदि प्रायः सभी परिस्थितियों से संदर्भित पूरे सामाजिक ताने–बाने को ध्यान में रखकर 'रामखण्ड रामायण' की विषय–वस्तु का विवेचन करना प्रासंगिक प्रतीत होता है। कारण यह है कि यदि वर्तमान परिस्थितियों को ही प्रत्यक्ष मानकर हम रामखण्ड रामायण का अध्ययन करेंगे तो एकपक्षीय प्रतिक्रिया के फलस्वरूप भ्रम की स्थिति ही बनी रहेगी।

शताब्दियों से समन्वयवादी दृष्टि भारतीय जीवन शैली की आधार–शिला रही है। एकता में अनेकता और अनेकता में एकता के दर्शन करने की मूल भावना सभ्यता की प्रथम किरण के अवतरण काल से ही भारतीय संस्कृति की चिन्तन धारा के रूप में अबाध गति से सतत् प्रवाहित होती आयी है। प्रस्तुत शोध कार्य में इसी दृष्टिकोण की मनोरम झलक यत्र–तत्र सर्वत्र बिम्ब प्रतिबिम्ब रूप में प्रतिभाषित होती रही है और आज भी हो रही है।

'रामखण्ड रामायण' एक ऐसा अभूतपूर्व ग्रन्थ रत्न है जो जनमानस के कुसंस्कारों को परिमार्जित और सुसंस्कारित करने में आज भी तत्पर है। 'रामखण्ड रामायण' में वंशपथ से लेकर राजपथ तक सभी सोपानों में वर्णित विशद कथानक में मानव जीवन से संबंधित जटिल समस्याओं के अचूक कल्याणकारी समाधान सूत्र अमोघ मंत्र के समान सर्वत्र विद्यमान है।

अतः इस अलौकिक ग्रन्थ का जितना भी प्रचार किया जाएगा, जितना अधिक पठन–पाठन एवं मनन–अनुशीलन होगा, उतना ही जगत् का मंगल होगा–इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। वर्तमान समय में तो, जब सर्वत्र हाहाकार मचा हुआ है, सारा संसार दुःख एवं अशान्ति की भीषण ज्वाला से जल रहा है, जगत् के कोने–कोने में मार–काट मची हुई है और प्रतिदिन हजारों मनुष्यों का संहार हो रहा है, करोड़ों–अरबों की सम्पत्ति एक दूसरे के विनाश के लिए खर्च की जा रही है, विज्ञान की सारी शक्ति पृथ्वी को श्मशान के रूप में परिणत करने में लगी हुई है, संसार के बड़े–से–बड़े मस्तिष्क संहार के नये–नये साधनों को ढूँढ़ निकालने में व्यस्त हैं, जगत् में सुख–शान्ति एवं प्रेम का प्रसार करने तथा भगवत्कृपा का जीवन में अनुभव करने के लिए रामखण्ड रामायण का पाठ एवं अनुशीलन परम आवश्यक है।

आज के भारतीय परिवेश की दृष्टि में ऐसी जनोपयोगी कृति की भूमिका निश्चित ही अत्यंत महत्वपूर्ण और सार्थक है, क्योंकि मानवीय जीवन मूल्यों एवं आदर्शों के क्षरण ने राष्ट्रीय निष्ठा और कार्य संस्कृति को झकझोर करके रख दिया है। स्वतंत्रता के पूर्व रामराज्य की दुहाई देकर मंगलकारी राज्य की स्थापना का दिवा–स्वप्न मृग–मरीचिका बनकर रह गया है। राष्ट्र भ्रष्टाचार की पाप–पंकिला–वैतरणी में आकंठ डूबा हुआ है। लोकतंत्र भ्रष्ट तंत्र का पर्याय बनकर रह गया है। निश्चित ही राष्ट्र–रथ पतन के दल–दल में तीव्र गति से धँसता चला जा रहा है। ऐसी संक्रान्ति बेला में प्रस्तुत शोध कार्य जनमानस को

कर्त्तव्यपरायणता तथा कार्य संस्कृति की सामयिक दृष्टि देकर दिशा–निर्देशन एवं पथ–प्रदर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करने में पूर्ण सफल होगा। इस दृष्टि से धर्म और साधना के स्वरूप की अवधारणा मानव, जाति, समाज एवं राष्ट्र के लिए सर्वथा उपादेय है। सर्वांग जीवन दर्शन की व्याख्या करने वाला यह ''सुसिद्धान्तोत्तम–रामखण्ड अवधी महाकाव्य में धर्म और साधना का स्वरूप'' शोध कार्य अपनी सोद्देश्यता को स्वतः सिद्ध करता है। सार्थक चिन्तन के अभाव में वैचारिक स्खलन के प्रभाव स्वरूप इस धमाचौकड़ी भरे दमघोंटू माहौल में 'जहाँ दक्षिण को वामहस्त की खबर तक नहीं है, अपनी अमूल्य धरोहर को पहचान कर उसकी बहुउद्देशीय सार्वकालिक उपादेयता को शोधपरक दृष्टि में सूक्ष्मांकित करना बड़े संयम व संकल्प का प्रतिफल है। यह संकल्प काफी हद तक जनमानस के तापों का शमन करने में समर्थ हो सकेगा।